एम.ए. हिन्दी

भाषा विज्ञान

प्रथम सेमेस्टर (चतुर्थ प्रश्न-पत्र)

एवं

हिन्दी भाषा

द्वितीय सेमेस्टर (चतुर्थ प्रश्न-पत्र)

संपादक - डॉ. रमेश टण्डन

एम.ए. हिन्दी
भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा
प्रथम सेमेस्टर (चतुर्थ प्रश्न-पत्र) द्वितीय सेमेस्टर (चतुर्थ प्रश्न-पत्र)
संपादक
डॉ. रमेश टण्डन

भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा

ISBN- 978-93-89989-46-5

●

प्रकाशक

वैभव प्रकाशन

अमीनपारा चौक, पुरानी बस्ती रायपुर (छत्तीसगढ़)

दूरभाष : 0771-4038958, मो. 94253-58748

e-mail : sahityavaibhav@gmail.com

www.vaibhavprakashan.com

आवरण सज्जा : कन्हैया साहू

प्रथम संस्करण : May 2020

मूल्य : 500.00 रुपये

कॉपी राइट : लेखकाधीन

●

BHASHA VIGYAN EVAM HINDI BHASHA

BY : DR. RAMESH TANDAN

Published by

Vaibhav Prakashan

Amin Para, Purani basti

Raipur, Chhattisgarh (India)

First Edition : May 2020

Price : Rs. 500.00

(प्रस्तुत पुस्तक के विभिन्न अध्यायों में लिखित पाठ्य सामग्री उसके लेखक/संकलनकर्ता के द्वारा एम ए हिन्दी में अध्ययनरत छात्रों के हित के लिए विभिन्न किताबों अथवा नेट से संकलित की गई है। अपने पाठ की पूर्णता के लिए इस पुस्तक के अध्याय लेखकों ने मूल किताबों अथवा परवर्ती संदर्भ/ शोध ग्रंथों अथवा नेट से उद्धरण अथवा उदाहरण लिए हैं, अतः उन मूल किताबों अथवा परवर्ती संदर्भ/शोध ग्रंथों अथवा नेट के क्रमशः लेखकों अथवा संपादकों/शोध छात्रों अथवा अपलोडर्स का सर्वश्रेष्ठ आभार जिनकी पाठ्य सामग्री को यहाँ उद्धृत किया जा सका है। मौलिक तथ्यों /परिभाषा आदि में फेरबदल के लिए इस पुस्तक के संपादक अथवा प्रकाशक जिम्मेदार नहीं होंगे अपितु अध्याय लेखक स्वयं जिम्मेदार होंगे तथा किसी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र खरसिया (छ.ग.) होगा।)

एम. ए. हिन्दी –

भाषा विज्ञान

(प्रथम सेमेस्टर – चतुर्थ प्रश्न–पत्र)

एवं

हिन्दी भाषा

द्वितीय सेमेस्टर (चतुर्थ प्रश्न–पत्र)

(छत्तीसगढ़ स्थित अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय बिलासपुर के अन्तर्गत विभिन्न महाविद्यालयों में संचालित एम ए हिन्दी प्रथम सेमेस्टर चतुर्थ प्रश्न–पत्र (भाषा विज्ञान) एवं एम ए हिन्दी द्वितीय सेमेस्टर चतुर्थ प्रश्न–पत्र (हिन्दी भाषा) के नवीनतम सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित एवं अन्य विश्वविद्यालयों के लिए भी एम. ए. हिन्दी की पाठ्य–पुस्तक)

संपादक

डॉ0 रमेश टण्डन

विभागाध्यक्ष (सहायक प्राध्यापक– हिन्दी)

महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय

खरसिया, जिला– रायगढ़ (छ.ग.)

वैभव प्रकाशन

रायपुर (छ.ग.)

भाग – 2

19 हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, वैदिक संस्कृत की विशेषताएँ	प्रो. संध्या पाण्डेय	183
20 लौकिक संस्कृत की विशेषताएँ, पाली की विशेषताएँ	श्री घनश्याम टण्डन	189
21 प्राकृत की विशेषताएँ, अपभ्रंश की विशेषताएँ	प्रो. दिनेशकुमार संजय	198
22 शौरसेनी की विशेषताएँ, अर्द्ध मागधी की विशेषताएँ	श्रीमती आशा भारद्वाज	202
23 आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण	डॉ. दिनेश श्रीवास	208
24 पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी का भौगोलिक विस्तार व उनकी विशेषताएँ	डॉ. दिनेश श्रीवास	216
25 बिहारी, पहाड़ी तथा इनकी बोलियों का भौगोलिक विस्तार तथा विशेषताए	डॉ. दिनेश श्रीवास	224
26 खड़ी बोली, ब्रज, अवधी का भौगोलिक विस्तार तथा उनकी विशेषताएँ	डॉ. शिवदयाल पटेल	230
27 उपसर्ग, समास	डॉ. रमेश कुमार टण्डन	241
28 प्रत्यय	डॉ. रमेश कुमार टण्डन	255
29 लिंग, वचन और कारक व्यवस्था के सन्दर्भ में हिन्दी के संज्ञा, सर्वनाम	प्रो. करुणा गायकवाड	269
30 लिंग, वचन और कारक व्यवस्था के सन्दर्भ में हिन्दी के विशेषण, क्रिया	डॉ. रेखा दुबे	284
31 हिन्दी वाक्य–रचना, पदक्रम और अन्विति	श्रीमती आशा भारद्वाज	297
32 राष्ट्रभाषा, राजभाषा और सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी	श्रीमती अलका यतिन्द्र यादव	312
33 मातृभाषा, माध्यम भाषा, संचार भाषा; हिन्दी की संवैधानिक स्थिति	श्रीमती अलका यतिन्द्र यादव	319
34 देवनागरी लिपि की विशेषताएँ और मानकीकरण	श्रीमती किरण शर्मा	327
35 हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधाएँ – आंकड़ा संसाधन, शब्द संसाधन, वर्तनी शोधक, मशीनी अनुवाद	श्री मदन मलहौत्रा	340
36 हिन्दी और मानकीकरण	प्रो. वन्दना रानी खाखा	350

व्यतिहार बहुब्रीहि समास– इसमें घात या प्रतिघात की सूचना मिलती है।

मुक्का–मुक्की	मुक्के–मुक्के से जो लड़ाई हुई
बाताबाती	बातों–बातों से जो लड़ाई हुई

प्रादी बहुब्रीहि समास – इसमें पूर्वपद उपसर्ग होता है।

बेरहम	नहीं है रहम जिसमें
निर्जन	नहीं है जन जहाँ

प्रयोग की दृष्टि से समास–

संयोगमूलक समास (संज्ञा समास) – इसमें दोनों पद संज्ञा होते हैं। जैसे, भाई–बहन, दिन–रात, माता–पिता।

आश्रयमूलक समास (विशेषण समास अथवा कर्मधारय समास)– इसमें प्रथम पद विशेषण होता है। जैसे, घनश्याम, शीशमहल, कच्चाकेला।

वर्णनमूलक समास– इसके अन्तर्गत अव्ययीभाव और बहुब्रीहि समास का निर्माण होता है। पूर्वपद अव्यय और उत्तरपद संज्ञा होता है। जैसे, यथाशक्ति, प्रतिमास, भरपेट, प्रत्येक।

सन्दर्भः–

1. पं0 कामता प्रसाद गुरू, हिंदी व्याकरण; काशी नागरी प्रचारिणी सभा, इंडियन प्रेस लिमिटेड प्रयाग, सं0 1984.
2. एजूकेशन, हरीश एकेडेमी, स्टडी मटेरियल.
3. www.mycoaching.in

♦●♦

"अगले जन्म में अच्छी जिंदगी पाने की ख्वाहिश में, यदि आप वर्तमान जिंदगी को ठीक से जीना नहीं चाहेंगे, तो पूर्व जन्म के अच्छे कर्मों के फलस्वरूप प्राप्त वर्तमान जिंदगी का क्या लाभ ?"

–डॉ. रमेश टण्डन फूलबंधिया

28

प्रत्यय

– डॉ0 रमेशकुमार टण्डन*

सेमेस्टर – II प्रश्नपत्र– IV (हिन्दी भाषा)
इकाई – 03 हिन्दी का भाषिक स्वरूप
हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था– खण्ड्य, खण्ड्येत्तर, हिन्दी शब्द रचना– उपसर्ग, प्रत्यय, समास। रूपरचना– लिंग, वचन और कारक व्यवस्था के सन्दर्भ में हिन्दी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया रूप। हिन्दी वाक्य–रचना, पदक्रम और अन्विति।

प्रत्यय वे शब्द हैं जो दूसरे शब्दों के अन्त में जुड़कर, अपनी प्रकृति के अनुसार, शब्द के अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं। प्रत्यय शब्द, दो शब्दों से मिलकर बना है – प्रति + अय। 'प्रति' का अर्थ 'साथ में, परंतु बाद में' और 'अय' का अर्थ 'चलने वाला' होता है। प्रत्यय वे शब्दांश है जो शब्द के अन्त में लगकर उसके अर्थ को बदल देते हैं। प्रत्यय के मुख्यतः दो भेद हैं–

1. कृत प्रत्यय (कृदन्त) – ये प्रत्यय क्रिया के धातु रूपों में लगकर संज्ञा, विशेषण आदि शब्द बनाते हैं।

2. तद्धित प्रत्यय – ये प्रत्यय संज्ञा, विशेषण, अव्यय आदि में

*जन्म : 03 जनवरी 1975, ग्राम– फूलबंधिया (रायगढ़), माता : श्रीमती फूलकुँवर टण्डन, पिता : श्री कौशलप्रसाद टण्डन, पत्नी : श्रीमती पूर्णिमा टण्डन, योग्यता : एम. ए. (हिन्दी, अंग्रेजी) सेट, पी–एच. डी., प्रकाशन : 1. काव्य संग्रह 'पीड़ा' 2014 में जयपुर से प्रकाशित, 2. पुस्तक 'आधुनिक कालीन हिन्दी साहित्य में नारी–अस्मिता का धरातलीय सच' का फरवरी 2020 में संपादन, अन्य : अन्तर्राष्ट्रीय शोध–पत्रिकाओं में 25 शोध–पत्र एवं राष्ट्रीय शोध–पत्रिकाओं में 04 शोध–पत्र प्रकाशित, 29 राष्ट्रीय शोध–संगोष्ठियों/कार्यशाला में सहभागिता, 03 अन्तर्राष्ट्रीय शोध–संगोष्ठियों/कार्यशाला में सहभागिता, 04 किताबों में चैप्टर लेखक, पत्र–पत्रिकाओं में कविता/लेख एवं अन्य उल्लेखनीय कार्यों के लिए लगातार छपना। सम्प्रति : महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय खरसिया में विभागाध्यक्ष (सहायक प्राध्यापक) – हिन्दी, मो0 नं0 9685671975, ई मेल– rameshktandan@gmail.com

लगकर संज्ञा, विशेषण बनाते हैं।

प्रत्यय के भेद व उपभेद को निम्न आरेख से समझ सकते हैं–

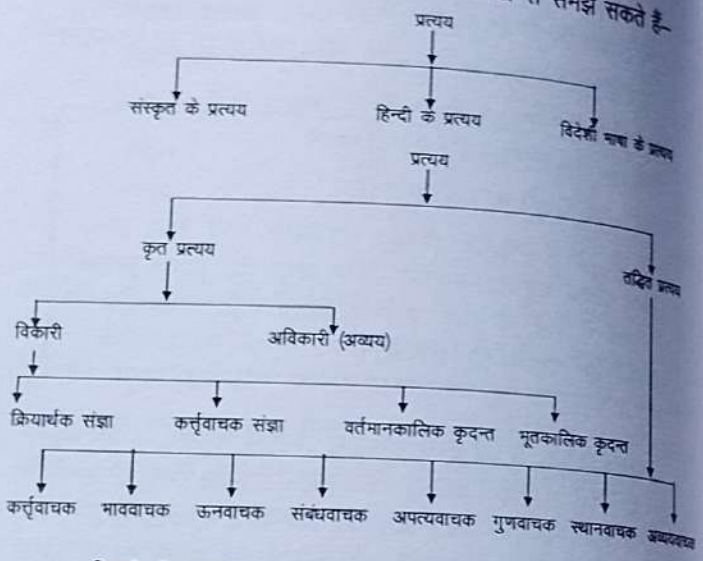

हिन्दी क्रियापदो के अन्त में कृत् प्रत्यय के योग से छः प्रकार के कृदन्त शब्द बनाए जाते हैं–

1. कर्तृवाचक कृदन्त – तैरना + आक = तैराक, खेलना + आड़ी = खिलाड़ी, गाना + वाला = गानेवाला, सड़ना + इयल = सड़ियल, हँसना + ओड़ = हँसोड़, पीना + अक्कड़ = पियक्कड़।

2. गुणवाचक कृदन्त – टिकना + आऊ = टिकाऊ, घटना + इया = घटिया, बहुत + एरा = बहुतेरा, हल + वाहा = हलवाहा, सुहाना + वन = सुहावन, आगे + ला = अगला।

3. कर्मवाचक कृदन्त – चाटना + नी = चटनी, खेलना + औना = खिलौना।

4. करणवाचक कृदन्त – झुलना + आ = झुला, रेतना + ई = रेती, ढकना + अन = ढक्कन, मथना + आनी = मथानी, झाड़ना + ऊ = झाड़ू।

5. भाववाचक कृदन्त – दौड़ना + अ = दौड़, घेरना + आ = घेरा, लड़ना + आई = लड़ाई, मिलना + वट = मिलावट, बचना + त = बचत,

घबराना + आहट = घबराहट, बसना + एरा = बसेरा, समझाना + औता = समझौता।

6. क्रियाद्योतक कृदन्त – बहना + ता = बहता, गाना + ता = गाता, रोना + आ = रोया।

हिन्दी में तद्धित के आठ प्रकार हैं–

1.**कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय** – सोना + आर = सुनार, मजाक + इया = मजाकिया, सब्जी + वाला = सब्जीवाला, पालन + हार = पालनहार, समझ + दार = समझदार।

2.**भाववचक तद्धित प्रत्यय** – देवता + त्व = देवत्व, बच्चा + पन = बचपन, सज्जा + वट = सजावट, रंग + त = रंगत, मीठा + आस = मीठास।

3. ऊनवाचक तद्धित प्रत्यय – ढोल + क = ढोलक, छाता + री = छतरी, बूढ़ी + इया = बुढ़िया, चोरी + टा = चोट्टा, पाग + ड़ी = पगड़ी।

4. संबंधवाचक तद्धित प्रत्यय – नाना + हाल = ननिहाल, नाक + एल = नकेल, ससुर + आल = ससुराल, फूफा + एरा = फुफेरा, भाई + जा = भतीजा।

5. अपत्यवाचक तद्धित प्रत्यय – वसुदेव + अ = वासुदेव, मनु + अ = मानव, कुरु + अ = कौरव, नर + आयन = नारायण, राधा + एय = राधेय, दिति + य = दैत्य।

6. गुणवाचक तद्धित प्रत्यय– निशा + अ = नैश, शरीर + इक = शारीरिक, पक्ष + ई = पक्षी, छूत + हा = छुतहर, लाल + इमा = लालिमा, कुल + ईन = कुलीन, मधु + र = मधुर, माया + वी = मायावी।

7. स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय – चारा + गाह = चारागाह, पटना + इया = पटनिया, आगा + आड़ी = आगाड़ी, सर्व +त्र = सर्वत्र, यद् + त्र = यत्र, तद् + त्र = तत्र।

8. अव्ययवाचक तद्धित प्रत्यय – सर्व + दा = सर्वदा, पीछा + ए = पीछे, धीर + ए = धीरे, यह + आँ = यहाँ, आप + स = आपस।

हिन्दी प्रत्यय के अन्य उदाहरण:–

हिन्दी – कृदन्त

1. अ – आकारान्त धातुओं से जोड़ने से भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं। जैसे– लूटना– लूट, मारना– मार, जाँचना– जाँच, पहुँचना– पहुँच, समझना– समझ, उछलना कूदना– उछलकूद, चमकना– चमक, देखना– भालना– देखभाल।

कभी–कभी धातु के उपांत्य में इ और उ होने से गुण हो जाता है। जैसे– मिलना– मेल, झुकना– झोक।

कभी–कभी धातु के उपांत्य अ की वृद्धि हो जाती है। जैसे– अड़ना– आड़, लगना– लाग, बढ़ना– बाढ़, चलना– चाल, फटना– फाट।

कोई–कोई विशेषण भी बनते हैं।

जैसे– बढ़ना– बढ़, घटना– घट, भरना– भर।

पूर्वकालिक कृदन्त भी बनते हैं।

जैसे– चलना– चल, जाना– जा, देखना– देख।

2. अक्कड़ (कर्तृ वाचक) –

बूझना– बुझक्कड़, कूदना– कुदक्कड़, भूलना– भुलक्कड़, पीना– पियक्कड़।

3. अंत (भाववाचक) –

गढ़ना– गढ़ंत, लिपटना– लिपटंत, लड़ना– लड़ंत, रटना– रटंत।

4. आ – इसके योग से बहुधा भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं। जैसे– घेरना– घेरा, फेरना– फेरा, जोड़ना– जोड़ा, झगड़ना– झगड़ा, छापना– छापा, रगड़ना– रगड़ा, झटकना– झटका, उतारना– उतारा, तोड़ना– तोड़ा।

किसी–किसी धातु के उपांत्य स्वर में गुण हो जाता है। जैसे– मिलना– मेला, टूटना– टोटा, झुकना– झोका।

इस प्रत्यय के योग से भूतकालिक कृदन्त बनाए जाते हैं। जैसे– मरना– मरा, धोना– धोया, बैठना– बैठा, पड़ना– पड़ा, बनाना– बनाया, खींचना– खींचा।

कहीं–कहीं करणवाचक संज्ञाएँ बनती हैं।

जैसे – झूलना– झूला, ठेलना– ठेला, फाँसना– फाँसा, झारना– झारा, पोतना– पोता, घेरना– घेरा।

5. आई – इस प्रत्यय से भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं, जिनसे क्रिया के व्यापार और क्रिया के दामों का बोध होता है। जैसे– क्रिया के व्यापार– लड़ना– लड़ाई, समाना– समाई, चढ़ना– चढ़ाई, दिखना– दिखाई, सुनना– सुनाई, पढ़ना– पढ़ाई, खुदना– खुदाई, जुतना– जुताई।

क्रिया के दाम– लिखाना– लिखाई, पिसाना– पिसाई, चराना– चराई, कमाना– कमाई, खिलाना– खिलाई, धुलाना– धुलाई, बनवाना– बनवाई।

6. आऊ– यह प्रत्यय योग्यता के अर्थ में लगता है। जैसे– टिकना– टिकाऊ, बिकना– बिकाऊ, चलना– चलाऊ, जलना– जलाऊ, गिरना– गिराऊ।

किसी–किसी धातु में इस प्रत्यय का अर्थ कर्त्तृवाचक होता है। जैसे– खाना– खाऊ, उड़ाना– उड़ाऊ, जुझाना– जुझाऊ।

7. अंकू, आक, आकू (कर्त्तृवाचक) –

उड़ना– उड़ंकू, लड़ना– लड़ंकू, तैरना– तैराक, लड़ना– लड़ाकू, उड़ना– उड़ाकू।

8. आन (भाववाचक) –

उठना– उठान, उड़ना– उड़ान, लगना– लगान, मिलना– मिलान, चलना– चलान।

9. आप (भाववाचक) –

मिलना– मिलाप।

10. आव (भाववाचक) –

चढ़ना– चढ़ाव, बचना– बचाव, छिड़कना– छिड़काव, बहना– बहाव, लगना– लगाव, जमना– जमाव, पड़ना– पड़ाव, घूमना– घुमाव, रूकना– रुकाव।

11. आवट (भाववाचक) –

लिखना–लिखावट, थकना– थकावट, रूकना– रुकावट, बनना– बनावट, सजना– सजावट, दिखना– दिखावट, मिलना– मिलावट, कहना– कहावत।

12. आवना (विशेषण) –

सुहाना– सुहावना, लुभाना– लुभावना, डराना– डरावना।

13. आवा (भाववाचक)–

भुलाना– भुलावा, छलना– छलावा, बुलाना– बुलावा, पहिरना– पहिरावा, पछताना– पछतावा।

14. आस (भाववाचक)–

पीना– प्यास, ऊँघना– उँघास, रोना– रोआस।

15. आहट (भाववाचक)–

चिल्लाना– चिल्लाहट, घबराना– घबराहट, गुर्राना– गुर्राहट, जगमगाना– जगमगाहट, गड़गड़ाना– गड़गड़ाहट।

16. इयल (कर्त्तृवाचक)–

अड़ना– अड़ियल, सड़ना– सड़ियल, मरना– मरियल,

17. ई (भाववाचक)–

हँसना– हँसी, कहना– कही, बोलना– बोली, मरना– मरी, धमकाना– धमकी, घुड़कना– घुड़की।

ई (करणवाचक)–

रेतना– रेती, फांसना– फांसी, चिमटना– चिमटी।

18. इया (कर्त्तृवाचक)–

जड़ना– जड़िया, लखना– लखिया, धुनना– धुनिया।

इया (गुणवाचक)–

बढ़ना– बढ़िया, घटना– घटिया।

19. ऊ (कर्त्तृवाचक)–

खाना– खाऊ, रटना– रट्टू, चलना– चालू, भगना– भग्गू, बिगाड़ना– बिगाड़ू, उतरना– उतारू (तैयार)।

ऊ (करणवाचक)–

झाड़ना– झाड़ू।

20. ए–

यह प्रत्यय सभी धातुओं में लगता है। इसके योग से अव्यय बनते हैं। इससे क्रिया की समाप्ति का बोध होता है। इससे बने हुए शब्दों को बहुधा पूर्ण क्रिया–द्योतक कृदंत कहते हैं।

जैसे– देखे, पाये, लिये, समेटे, निकाले।

21. एरा (कर्त्तृवाचक)–

कमाना– कमेरा, लूटना– लुटेरा।

एरा (भाववाचक)–

निबटाना– निबटेरा, बसना– बसेरा।

22. ऐया (कर्त्तृवाचक)–

काटना– कटैया, बचाना– बचैया, परोसना– परोसैया, भरना–भरैया।

23. ऐत (कर्त्तृवाचक)–

लड़ना– लड़ैत, चढ़ना– चढ़ैत, फेंकना– फिकैत।

24. ओड़ा (कर्त्तृवाचक)–

भागना– भगोड़ा, हँसना– हँसोड़ा (हँसोढ), चाटना– चटोरा।

25. औता, औती (भाववाचक)–

समझाना– समझौता, मनाना– मनौती, छुड़ाना– छुड़ौती, चुकाना– चुकौती, कसना– कसौटी, चुनना– चुनौती (प्रेरणा0)।

26. औना, औनी, आवनी–

खेलना– खिलौना, बिछाना– बिछौना, ओढ़ना– उढ़ौना, पहराना– पहरौनी (पहरावनी), छाना– छावनी, कहना– कहानी, (आँख) मीचना– (आँख) मिचौनी)।

27. औवल (भाववाचक)–

बूझना– बुझौवल, बनना– बनौवल।

28. क (भाववाचक, स्थानवाचक)–

बैठना– बैठक, फाड़ना– फाटक।

क (कर्त्तृवाचक)–

मारना– मारक, घालना– घालक, घोलना– घोलक।

29. का (विविध अर्थ में)–

छीलना– छिलका।

30. की (विविध अर्थ में)–

फिरना– फिरकी, फूटना– फुटकी, डूबना– डुबकी।

31. गी (भाववाचक)–

देना– देनगी।

32. त (भाववाचक)–

बचना– बचत, खपना– खपत, पड़ना– पड़त, रँगना– रंगत।

33. ती (भाववाचक)–

बढ़ना– बढ़ती, घटना– घटती, चढ़ना– चढ़ती, भरना– भरती, चुकना– चुकती, गिनना– गिनती, पाना– पावती।

34. न (भाववाचक)–

चलना– चलन, लेना–देना– लेनदेन, खाना–पीना– खानपान।

न (करणवाचक)–

झाड़ना– झाड़न, बेलना– बेलन।

35. नी–

इस प्रत्यय के योग से स्त्रीलिंग कृदंत संज्ञाएँ बनती हैं। जैसे– नी (अ) – (भाववाचक)–

करना– करनी, भरना– भरनी, बोना– बोनी।

नी (आ)– (कर्मवाचक)–

जैसे– कहना– कहानी।

36. वाँ (विशेषण)–

ढालना– ढलवाँ, पीटना– पिटवाँ।

37. वाला–

जाना– जानेवाला, खाना– खानेवाला, देना– देनेवाला।

38. वैया –

खवैया, गवैया।

39. हा (कर्त्तृवाचक) –

काटना– कटहा, मारना– मरकहा, चराना– चरवाहा।

हिन्दी तद्धित

1. आ – इस प्रत्यय को संज्ञा में लगाने से विशेषण बनते हैं।

जैसे– भूख– भूखा, प्यास– प्यासा, मैल– मैला, प्यार– प्यारा, ठंड– ठंडा।

नाम और जातिसूचक संज्ञाओं में यह प्रत्यय अनादर अथवा दुलार के अर्थ में भी प्रयोग किया जाता है।

जैसे– शंकर– शंकरा, ठाकुर– ठाकुरा, बलदेव– बलदेवा।

पदार्थों की स्थूलता दिखाने के लिए भी इस प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

जैसे– लकड़ी– लकड़ा, चिमटी– चिमटा, घड़ी– घड़ा (विनोद में)।

अव्यय के रूप में भी इसका प्रयोग होता है।

जैसे– द्वार– द्वारा।

2. आई – इस प्रत्यय के योग से विशेषणों और संज्ञाओं से भाववाचक संज्ञाएँ बनते हैं।

जैसे – भला– भलाई, बुरा– बुराई, ढीठ– ढिठाई, चतुर– चतुराई, पंडित– पंडिताई, चिकना– चिकनाई।

इस प्रत्यय से कुछ जातिवाचक संज्ञाएँ भी बनती है। जैसे– मिठाई। 'आई' प्रत्ययान्त सभी तद्धित शब्द स्त्रीलिंग हैं।

3. आनंद – विनोद में नामों के साथ जोड़ा जाता है।

जैसे– गड़बड़ानंद, गोलमालानंद।

4. आऊ (गुणवाचक) – आगे– अगाऊ, घर– घराऊ, पंडित– पंडिताऊ।

5. आका / आटा– अनुकरणवाचक शब्दों से इस प्रत्यय के द्वारा भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं।

जैसे – धम– धमाका, भड़– भड़ाका, धड़– धड़ाका। भर्राटा, सर्राटा, घर्राटा।

6. आन (भाववाचक)– यह प्रत्यय अक्सर परिमाणवाचक विशेषणों में लगता है।

जैसे– घमस– घमासान, ऊँचा– उँचान, नीचा– निचान, चौड़ा– चौड़ान।

7. आना (स्थानवाचक) – राजपूत– राजपुताना, तिलंगा– तिलंगाना।

8. आयत (भाववचक) – बहुत– बहुतायत, पंच– पंचायत।

9. आर – यह संस्कृत के 'कार' प्रत्यय का अपभ्रंश है।

जैसे– कुम्हार (कुम्भकार), सुनार (सुवर्णकार), लुहार।

कभी–कभी इस प्रत्यय से विशेषण बनते हैं।

जैसे– दूध– दुधार, गाँव– गँवार।

10. आरी, आरा, आड़ी – पूजा– पुजारी, खेल– खिलाड़ी, भिखारी, हत्यारा।

आरा (भाववचक) – छूट– छुटकारा।

11. आल– इस प्रत्यय से विशेषण और संज्ञाएँ बनती हैं।

जैसे– लाठी– लठियाल, भाठा– भठियाल, दया– दयाल, कृपा– कृपाल, डाढ़ी– डढ़ियल।

कहीं–कहीं यह प्रत्यय, संस्कृत प्रत्यय 'आलय' का अपभ्रंश है।

जैसे– ससुराल (श्वशुरालय), ननिहाल, घड़ियाल (घड़ी का घर)।

12. आला– दिवाला, शिवाला।

13. आली– यह संस्कृत प्रत्यय 'आवली' का अपभ्रंश है, समूह के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

जैसे– दिवाली।

14. आलू– झगड़ा– झगड़ालू, लाज– लजालू, डर– डरालू।

15. आवट (भाववाचक)– अमावट, महावट।

16. आस (भाववाचक) – मीठा– मिठास, खट्टा– खटास, नींद– निंदास।

17. आसा – मुँडासा, मुँहासा।

18. आहट (भाववाचक) – कड़ुवा– कड़ुवाहट, चिकना– चिकनाहट, गरम– गरमाहट।

19. इया – कुछ संज्ञाओं से इस प्रत्यय के द्वारा कर्तृवाचक संज्ञाएँ बनती हैं।

जैसे– गाड़र– गड़रिया, मुख– मुखिया, दुख– दुखिया, रसोइया, रसिया।

इया (स्थानवाचक) – कन्नौज– कनौजिया, कलकत्ता– कलकतिया।

इया (ऊनवाचक) – खाट– खटिया, डब्बा– डबिया, गठरी– गठरिया, बेटी– बिटिया।

इया (वस्त्रार्थी) – जाँघिया, अँगिया।

इया – अनादर अथवा दुलार के लिए भी यह प्रत्यय लगता है। जैसे– हरी– हरिया, राधा– रधिया, माई– मैया, भाई– भैया। तेली– तिलिया, धोबी– धुबिया।

इया– प्राचीन कविता में यह प्रत्यय लगा हुआ मिलता है। जैसे– आँख– अँखिया, भांग– भंगिया, आग– अगिया, जी– जिया, पी– पिया।

20. ई – (विशेषण) भार– भारी, ऊन– ऊनी, देश– देशी।

जंगली, बैंगनी, गुलाबी, बैसाखी, सरकारी।

मारवाड़ी, बंगाली, गुजराती, पंजाबी, अरबी।

ऊनवाचक संज्ञाएँ– पहाड़– पहाड़ी, घाट– घाटी, ढोलकी, डोरी, टोकरी।

व्यापारवाचक संज्ञाएँ– तेली, माली, धोबी।

भाववचक संज्ञाएँ– बुद्धिमान– बुद्धिमानी, सावधान– सावधानी, चतुर– चातुरी, गृहस्थ– गृहस्थी।

समुदायवाचक संज्ञाएँ– बीस– बीसी, बत्तीसी, पच्चीसी।

भाववाचक संज्ञाएँ–चोर– चोरी, खेत– खेती, किसान– किसानी, दलाल– दलाली, डाक्टर– डाक्टरी।

भूषणार्थक– अँगूठी, कंठी, पैरी, जीभी।

21. ईला – (विशेषण) रंग– रंगीला, छवि– छवीला, लाज– लजीला, रस– रसीला, जहर– जहरीला, पानी– पनीला।

संज्ञाएँ– गोबर– गोबरीला।

22. उआ – मछुआ, गेरुआ, फगुआ।

23. ऊ – (विशेषण) ढाल– ढालू, घर– घरू, बाजार– बाजारू, पेट– पेटू, झांसा– झांसू, नाक– नक्कू (बदनाम)।

व्यक्तिवाचक तथा सम्बन्धवाचक संज्ञाओं में यह प्रत्यय प्रेम अथवा आदर के लिए प्रयुक्त होता है।

जैसे– श्याम– श्यामू, बच्चा– बच्चू, लल्ला– लल्लू।

24. ए– सामना– सामने, पीछा– पीछे।

25. एरा– भाववाचक– अंध– अंधेरा।

संबंधवाचक– मामा–ममेरा, चाचा–चचेरा, फूफा–फुफेरा, मौसा– मौसेरा।

26. एड़ी (कर्त्तृवाचक) – भांग– भंगेड़ी, गांजा– गंजेड़ी।

27. एली– हाथ– हथेली।

28. एल– फूल– फुलेल, नाक– नकेल।

29. ऐत– (व्यवसायवाचक)– लट्ठ– लठैत, भाला– भलैत, डाका– डकैत।

30. ऐल– (गुणवाचक) – खपरा– खपरैल, दाँत– दंतैल।

31. एला – एक– अकेला, आधा– अधेला, सौत– सौतेला।

32. ऐला– (गुणवाचक) – वन– वनैला, मूँछ– मुँछैला।

33. औड़ा – हाथ– हथौड़ा।

34. औती – बाप– बपौती, बूढ़ा– बुढ़ौती।

35. औता – काठ– कठौता।

36. ओला (ऊनवाचक) – साँप– सँपोला, खाट– खटोला, माँझ– मँझोला।

37. क – धड़– धड़क, भड़– भड़क, धम– धमक।
चौक, पंचक, सप्तक, अष्टक।
ठंड – ठंडक, ढोल– ढोलक।

38. कर – खास– खासकर, विशेष– विशेषकर।

39. का – छोटा– छुटका, बड़ा– बड़का, छाप– छपका।
इक्का, दुक्का, चौका।
मा– मैका, माटी– मटका, लाड़– लड़का।

40. की (ऊनवाचक) – कन– कनकी, टिम– टिमकी।

41. जा – भतीजा, भानजा।
दूजा, तीजा।

42. जी – गुरुजी, पंडितजी, बाबूजी।

43. टा, टी (ऊनवाचक) – रोआँ– रोंगटा, काला– कलूटा, चोर– चोट्टा, बहू– बहूटी।

44. ठो – दोठो, चारठो।

45. ड़ा, ड़ी (ऊनवाचक) – चाम– चमड़ा, टूक– टुकड़ा, दुख– दुखड़ा, मुख– मुखड़ा, लँग– लँगड़ा, टाँग– टँगड़ी, आँत– अँतड़ी।
स्थानवाचक – आगा– अगाड़ी, पीछा– पिछाड़ी।

46. त (भाववाचक) – चाह– चाहत, रंग– रंगत।

47. ता (विविध) – रायता (राई से बना)।

48. तना – यह– इतना, वह– उतना, जो– जितना, कौन– कितना।

49. था – चार– चौथा, छः– छठा।

50. नी – चाँद– चाँदनी, पाँव– पैंजनी, नथ– नथनी।

51. पन (भाववाचक) – काला– कालापन, लड़का– लड़कपन, बाल– बालपन, पागल– पागलपन।

52. पा (भाववाचक) – बूढ़ा– बुढ़ापा, मोटा– मोटापा।

53. ब – यह– अब, वह– तब, जो– जब, कौन– कब।

54. राम – इसका प्रयोग आदर, निरादर अथवा विनोद के लिए

होता है। जैसे– माताराम, मेंढकराम, गीदड़राम।

55. **री** – कोठा– कोठरी, छत्ता– छतरी, बाँस– बाँसुरी।

56. **ला (गुणवाचक)** – आगे– अगला, पीछे– पिछला, माँझ– मँझला, धुंध– धुँधला, लाड़– लाड़ला।

57. **ली**– टीका– टिकली, खाज– खुजली, सूप– सुपली।

58. **ल (विविध)** – घाव– घायल, पाँव– पायल।

59. **यों** – यह– यों, वह– त्यों, जो– ज्यों, कौन– क्यों।

60. **वंत** – दया– दयावंत, गुण– गुणवंत, शील– शीलवंत।

61. **वाला** – टोपी– टोपीवाला, गाड़ी– गाड़ीवाला।

62. **वाँ (क्रमवाचक)** – पाँचवाँ, सातवाँ, दसवाँ।

63. **वा**– बेटा– बिटवा, बच्छा– बछवा, बच्चा– बचवा।

64. **स (भाववाचक)** – आप– आपस, घाम– घमस।
(क्रमवाचक) – बारह– बारस, तेरस, चौदस।

65. **सा** – यह– ऐसा, वह– वैसा, कौन– कैसा, जो– जैसा।

66. **सरा (क्रमवाचक)** – दूसरा, तीसरा।

67. **सों**– परसों, नरसों।

68. **हरा** – इकहरा, दुहरा।
सोना– सुनहरा, रूपा– रुपहरा।

69. **हा (गुणवाचक)** – हल– हलवाहा, कबीर– कबिराहा।

70. **हारा** – लकड़ी– लकड़हारा, चुड़िहारा, मनिहारा।

सन्दर्भः–

1. पं0 कामता प्रसाद गुरू, हिंदी व्याकरण; काशी नागरी प्रचारिणी सभा, इंडियन प्रेस लिमिटेड प्रयाग, सं0 1984
2. www.mycoaching.in

♦●♦

"मैं कई भाषाओं को जानना नहीं चाहता, सिर्फ एक भाषा को तो ठीक से जान लूँ– मानवता की भाषा।"

–डॉ. रमेश टण्डन फूलबंधिया